डॉ. सुधीर कुमार सुमन
(मैथिली विभाग)
पूर्णियाँ कॉलेज, पूर्णियाँ

स्नातक प्रतिष्ठा (मैथिली)
प्रथम खंड - 2019-20
द्वितीय - पत्र

संकलन - मैथिली अकादमी, पटना सँ प्रकाशित
निबन्ध -: शीर्षक - शिक्षा
लेखक - म० म० मुकुन्द झा 'बक्शी'

ई म.म. मुकुन्द झा बक्शीक निबन्धक अंश थीक। एहिमे निबन्धकार मिथिलाक प्राचीन शिक्षाक संग-संग वर्तमान स्थितिक चर्चा कयलनि अछि। लेखकक अनुसारें शिक्षाक चारि गोट भेद अछि - शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा आ नैतिक शिक्षा। एहि चारू प्रकारक शिक्षासँ चारि प्रकारक शक्ति उत्पन्न होइत अछि। एहि चारूक परस्पर संयोगसँ मानवकें चारूवर्गक फल (अर्थ, धर्म, काम आ मोक्ष) द्वारा पुरुषार्थक प्राप्ति होइत अछि।

शारीरिक आ मानसिक मे प्रायः अन्योन्याश्रय संबंध अछि। एकक अभावमे दोसर स्वतः नष्ट भए जाइत अछि। ~~शारि~~ शारीरिक शिक्षामे निबन्धकार व्यायामकें प्रमुख स्थान दैत छथि। व्यायाम सभक लेल नितान्त आवश्यक अछि। एकर अभाव मे लोकक शरीर स्वस्थ नहिं रहि सकैत अछि। कारण बिना ओकरे शारीरिक पाचन-क्रिया नीक जकाँ नहि भऽ सकैत अछि। अतएव मानसिक शिक्षार्थी अपन शक्ति भरि व्यायाम कय बल-वीर्यक रक्षा करथि, जाहि सँ मानसिक शक्तिक ह्रास नहिं होइत। कारण, यदि व्यायाम नहिं करताह तँ मानसिक शक्तिक ह्रास भए जाएतनि। मुदा जे मानव एकर निर्वाह नहिं करैत अछि तकर सम्पूर्ण जीवन शारीरिक आ मानसिक सुखसँ रहित भय जाइत छैक। मानवक बाल्यावस्थाक कएल गेल व्यायाम भविष्य मे सहायक होइत अछि।

वर्तमानमे मैथिल छात्रवृन्दक मध्य शारीरिक शिक्षाक अभाव जकाँ देखल जाइत अछि। ओ एकरा हेय दृष्टिसँ देखैत छथि। एकरा ओ सभ पहलमान वा बुड़िक कर्तव्य बुझैत छथि। एहि ~~हेतु~~ हेतु मुख्य रूपें लोकक कुंठित ~~बुद्धि~~ बुद्धि जिम्मेदार रहैत अछि।

शिक्षाक तेसर आ चारिम भेद अर्थात ~~नैतिक~~ धार्मिक आ नैतिक शिक्षाक तन आ मन दुनुसँ घनिष्ठ संबंध अछि। ई दुनु संस्कृत शिक्षासँ निकलल अछि। एकर ज्ञान तँ दैनिक पाठे सँ भए जाइत अछि। ई तँऽ कोनो एक विषय थीक। मुदा एकरा सँ बेसी लोक पाठावस्थे धरि मन रखैत अछि। एहन विरले लोक होइत अछि जे पाठान्तर एकरा मन रखैत छथि। ओहो अर्थक कामना सँ एकरा मन रखैत छथि, नहि कि स्वान्तः सुखाय।

एहि ठामक जाहि शिक्षाक हेतु देश-विदेशक लोक अबैत छल, ओ शिक्षा आब विलीन भेल जा रहल अछि। आइ लोक विदेशी शिक्षाक पाछाँ दौड़ल जा रहल अछि। जाहि मिथिलाक नाम 'मथ्यन्ते रिपवोऽस्यामिति' छल ओ आब शिक्षाक हेतु दोसर दिशा देखि रहल अछि। एकरा तऽ मिथिलाक दुर्दिने कहल जा सकैत अछि। "अतएव जाहिएक क्षेत्रपाल आदि धरि मिथिला मध्य सहस्राधिक विद्वान समस्तशास्त्रपारदृश्वा विराजमान छथि, परन्तु यद्यपि ई मिथिला एखन यथावत् प्रसिद्धि किएक नहिं पबैछ? जे किछु एकर प्रसिद्धि एखनो देखैत छी से वर्तमान विद्वान जनक विद्वत्तामूलक नहिं, किन्तु पूर्वक महानुभाव मननशील पदवाक्य-प्रमाण-पारावार-पारीण निखिल-तन्त्र मन्त्रादिविद्या नदीश कुमारिल-भट्ट-मण्डन मिश्र, मुरारि मिश्र, पक्षधर मिश्र, महेश ठाकुर, गोकुलनाथोपाध्याय आदिकसँ लऽ' क' सम्प्रति कतिपय महोदार-चरित विद्वान ओ श्री 5 महाराज मिथिलेश ओ हुनक परिवार मूलक जाहि महानुभावलोकनिक सुयश ओ उपाधिकेँ अनुसन्धानक' ओहि आमोद-प्रमोदमे एखनुक बहुतोक हमर मैथिल जातिक बालक मग्न रहैत छथि"

अस्तु एहि निबन्धमे मिथिलाक प्राचीन शिक्षाक महात्म्य आ आधुनिक विदेशी शिक्षाक हीनता देखाओल गेल अछि।